BPSC 134 (introduction to International Relations)

Realist Theory of International Relations (Hans J Morgenthau) by Dr. Manish Jha.

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का यथार्थवादी दृष्टिकोण / मॉरगेन्थाऊवाद

यथार्थवादी दृष्टिकोण आदर्शवादी सिद्धान्तों की असफलता का परिणाम है। राष्ट्रसंघ की स्थापना व नैतिक मूल्यों पर आधारित विश्वव्यवस्था को ध्वस्त करते हुए हिटलर और मुसोलिनी के उदय एवं द्वितीय विश्व युद्ध ने युद्ध व शक्ति की अभिवृत्तियों को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का पर्याय माना। यथार्थवादी दृष्टिकोण शक्ति, शस्त्र और युद्ध को मानव स्वभाव की विशेषताएँ मानता है। इसकी मूल मान्यता यह है कि राष्ट्रों के बीच विरोध एवं संघर्ष सदैव चलते रहते हैं। उनके अनुसार राष्ट्र की शक्ति का विकास ही उसके हितों को पूर्ण करने का एकमात्र साधन है। शक्ति और हित के आधार पर ही राजनीति के वास्तविक अभिनेताओं के कार्यों को समझा जा सकता है। उनके अनुसार विदेश नीति संबंधी निर्णय राष्ट्रीय हित व शक्ति के सापेक्ष में लिये जाते हैं न कि नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर। मारगेन्थाऊ, जॉर्ज कैनन, नेबूर, जॉर्ज श्वारजनबरगर आदि इस विचार के समर्थक हैं जिनमें से मॉरगेन्थाऊ को यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रवक्ता कहा जा सकता है। उनके अनुसार "अंतर्राष्ट्रीय राजनीति प्रत्येक राजनीति की भाँति शक्ति संघर्ष है। राष्ट्रहित उसकी मुख्य कुंजी है और उसे केवल शक्ति के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है।" इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को आदर्शवादी पर्यावरण से मुक्ति दिलायी। यद्यपि यह सिद्धान्त शक्ति को सबसे बड़ा निर्णायक तत्व तथा शक्ति संघर्ष के स्थायित्व को स्वीकारता है, जो पूरी तरह सही नहीं माना जा सकता।

यथार्थवादी सिद्धान्त की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि मॉरगेन्थाऊ द्वारा 1949 में रचित ग्रन्थ Politics among Nations के द्वारा हुयी। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की यथार्थवादी विचारधारा के वे प्रतिनिधि प्रवक्ता हैं तथा वर्षों तक वे सिद्धान्तकारों में अग्रणी रहे हैं। गाजी एलगोसाबी ने मॉरगेन्थाऊवाद को यथार्थवाद का पर्याय माना है। शक्ति के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रहित की महत्ता (concept of interest defined in terms of power) के कारण मॉरगेन्थाऊ के यथार्थवादी दृष्टिकोण को शक्तिवादी दृष्टिकोण भी कहा जाता है। 1945 के बाद ई.एच. कार, श्वारजनबरगर, क्विंसी राइट आदि ने भी शक्ति की इस यथार्थवादी परिकल्पना को विस्तृत करने का प्रयास किया।

मॉरगेन्थाऊ ने राजनीतिक यथार्थवाद के छः नियम प्रतिपादित किये :-

1) राजनीति पर प्रभाव डालनेवाले सभी नियमों की जड़ें मानव प्रकृति में होती हैं - मॉर्गेन्थ्यू के अनुसार समाज की भाँति राजनीति भी उन यथार्थवादी नियमों से अनुशासित होती है जो मानव प्रकृति में निहित है। वास्तविक तथ्यों और उनके परिणामों की पृष्ठभूमि में तर्कपरक मूल संकल्पनाओं की परीक्षा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के तथ्यों को सार्थक बनाती है। राजनीति का कोई भी सिद्धान्त विवेक व अनुभव की विविध परीक्षा के अन्तर्गत लाया जाना चाहिए।

2) राष्ट्रीय हितों को शक्ति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है : शक्ति के रूप में परिभाषित हित की अवधारणा राष्ट्रीय हितों की सिद्धि के लिए शक्ति का प्रयोग है। हित का केन्द्र बिन्दु सुरक्षा है और हितों की सुरक्षा के लिए शक्ति अर्जित की जाती है। राजनीति का मुख्य [illegible] हेतु हितों का संवर्धन है और इसी आधार पर राजनीति को एक सैद्धान्तिक रूप से स्वतंत्र विषय मानकर अध्ययन किया जा सकता है। यथार्थवादी

इस बात की परवाह नहीं करते कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में क्या होना चाहिए और क्या नैतिक है? वह केवल उन्हीं संभावनाओं की ओर ध्यान देता है जो किसी विशेष राष्ट्र के काल और स्थान की किसी ठोस परिस्थितियों के अन्तर्गत आती है। विदेश नीति का सम्बन्ध उसकी सफलता की राजनीतिक आवश्यकताओं से होना चाहिए न कि किसी अन्य वस्तु से।

3) राष्ट्रीय हित का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है - मॉरगेन्थाऊ राष्ट्रहित का कोई निश्चित अर्थ मानकर नहीं चलते। उनका विश्वास है कि राजनीतिक व सांस्कृतिक वातावरण राजनीतिक क्रियाओं को अनुप्राणित करने वाले हितों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, अतः शक्ति का विचार भी बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। अतः एक सफल राजनीतिज्ञ के लिए आवश्यक है कि वह राष्ट्रहित के मूल तत्वों को बदलती हुयी परिस्थितियों के अनुसार ढालने का प्रयत्न करता रहे।

4) विवेक राजनीति का उच्चतम मूल्य: यथार्थवाद के अनुसार अमूर्त विश्वव्यापी नैतिक मान्यताओं के आधार पर राष्ट्रों का कार्यकलाप संभव नहीं है। उनके अनुसार परिस्थितियों और अवसर के अनुसार राष्ट्रों को नैतिक सिद्धान्तों का पालन विवेक और संभावित परिणामों के आधार पर करना चाहिए। राजनीति में राज्य का सबसे बड़ा गुण अस्तित्व की रक्षा है और उसके लिए विवेक राजनीति का उच्चतम मूल्य है। कोई भी राज्य नैतिकता की दुहाई के आधार पर अपनी सुरक्षा को खतरे में नहीं डाल सकता।

5) राष्ट्र के नैतिक मूल्यों को सार्वभौमिक मूल्यों से पृथक् मानना - यह दर्शन प्रत्येक राज्य को एक ऐसे राजनीतिक कर्ता के रूप में देखता है जो हमेशा शक्ति के माध्यम से अपने हितों की सिद्धि के कार्य में जुटा रहता है। यह राष्ट्र की नैतिक कामनाओं को सार्वभौम नैतिक मूल्यों से पृथक् मानता है। यदि हम इस तथ्य को स्वीकार कर लें कि प्रत्येक शक्ति का विकास अपने हितों के विकास की पूर्ति के लिए करता है तो यह मान्यता हमें नैतिक दुहाई की अनिवार्यता से और इस प्रकार राजनीतिक मूल्यों के दुष्परिणामों से बचा सकती है।

6) राजनीतिक क्षेत्र की स्वायत्तता: यह सिद्धान्त राजनीति के क्षेत्र की स्वायत्तता में विश्वास करती है। यह गैर राजनीतिक नियमों या तत्वों की उपेक्षा नहीं करता बल्कि उसे राजनीतिक नियमों के अधीन मानता है। उनके अनुसार प्रत्येक अंतर्राष्ट्रीय समस्या का कानूनी, नैतिक और राजनैतिक पहलू होता है और राजनीतिज्ञ कानूनी और नैतिक मान्यताओं के महत्व को स्वीकारते हुये उनका उतना ही उपयोग करते हैं जितना उपयुक्त होता है। उदाहरण के लिए चीन में 1949 में साम्यवादी शासन की स्थापना के बाद पश्चिम के देशों ने नैतिक दृष्टि से यह विचार किया कि साम्यवादी चीन की नीतियाँ पाश्चात्य विश्व के नैतिक सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं हैं अतः वर्षों तक चीन को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनने योग्य नहीं पाया गया। 1971 की चीन रूस सीमा संघर्ष, वियतनाम युद्ध के कारण वियतनाम व अमेरिका में उत्पन्न रोष व आर्थिक संकट ने यह मानने को मजबूर कर दिया कि अमेरिका की शक्ति प्रसार व राष्ट्रीय हित की दृष्टि से चीन को मान्यता देना उपयोगी होगा और उसे 1971 में

राजनैतिक आधार पर मान्यता दी गयी। उनके अनुसार राजनीतिक प्रश्नों के निर्णय केवल राष्ट्रीय हित और शक्ति के विस्तार की कसौटी पर ही किया जाना चाहिए। राजनीतिक यथार्थवाद अंतर्राष्ट्रीय समस्या के कानूनी, नैतिक और राजनैतिक पक्षों के उचित समन्वय पर बल देता है।

मॉरगेन्थाऊ के यथार्थवादी सिद्धान्तों की आलोचना के क्रम में हॉफमैन ने इसे 'असंगतियों से भरा' व रॉबर्ट टकर ने इसे 'वास्तविकता से परे' कहा। मॉरगेन्थाऊ अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में 'हित संघर्ष' को सर्वोपरि मानकर यह मानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सदैव विभिन्न राष्ट्रों के बीच संघर्ष होता रहता है। यद्यपि संघर्ष निसंदेह होते हैं किन्तु इसके साथ ही वे सहयोग भी करते हैं। वासरमैन के अनुसार यह सिद्धान्त निरपेक्ष एवं अप्रमाणिक आवश्यकतावादी नियमों पर आधारित है। उनके मानव प्रकृति के संबंध में विचार दोषपूर्ण हैं। वे यह मानकर चलते हैं कि सब मनुष्य और राज्य शक्ति की लालसा रखते हैं, उसे बढ़ाने का यत्न करते हैं और युद्ध को शाश्वत नियम समझकर शांति की उपेक्षा करते हैं। हैरल्ड स्प्राउट ने इस सिद्धान्त को अपूर्ण माना है क्योंकि इसमें राष्ट्रीय नीतियों के मूल्यगत लक्ष्यों की उपेक्षा की गयी है। मॉरगेन्थाऊ ने शक्ति को साध्य माना है जबकि हॉफमैन उसे एक माध्यम मानते हैं जिससे राज्य अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं। मॉरगेन्थाऊ का सिद्धान्त अनुभवात्मक सर्वेक्षण पर आधारित न होकर अनुमानों पर आधारित है। इन्होंने शक्ति पर बहुत अधिक बल दिया है। राष्ट्रीय हित को शक्ति के अतिरिक्त अन्य तत्व - शासन का स्वरूप, जनमत, राज्य की आन्तरिक स्थिति भी प्रभावित करते हैं। शक्ति राष्ट्र का एक लक्ष्य हो सकता है परन्तु शक्ति के साथ में वह अन्य लक्ष्यों की भी आकांक्षा रखता है। कभी न समाप्त होने वाले शक्ति संघर्ष रूपी विश्व में कई ऐसी गैर राजनीतिक गतिविधियाँ होती रहती हैं जिनका शक्ति से कोई संबंध नहीं है। कैनेथ वाल्ट्ज के अनुसार इस सिद्धान्त में निश्चयात्मकता और अनिश्चयात्मकता का खींचतान कर मिलाप किया गया है। हॉफमैन ने इस सिद्धान्त को 'पावर मॉनिज्म' की संज्ञा दी है। टकर के अनुसार 'यदि मॉरगेन्थाऊ का सिद्धान्त ठीक मान लिया जाय तो इसका मतलब होगा कि किसी राज्य का कोई भी कार्य अनैतिक नहीं हो सकता।"

परन्तु फिर भी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि में यथार्थवाद के योगदान को कम नहीं आंका जा सकता। यह सिद्धान्त अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के संचालित होने का एक तर्कसंगत विश्वसनीय आधार प्रस्तुत करता है। उन्होंने द्वि-विश्वयुद्ध के पहले के आदर्शवादी मकड़जाल से अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को मुक्ति दिलायी। वॉल्ट्ज के अनुसार "मॉरगेन्थाऊ से पहले अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का कोई सुनिश्चित सिद्धान्त चाहे न मिलता हो पर उनके सिद्धान्त रचना के लिए पर्याप्त सामग्री अवश्य मिलती है।" थॉम्पसन ने लिखा है "मॉरगेन्थाऊ विश्व की राजनीति पर लिखने वाले समकालीन लेखकों में सबसे बड़ा है और उसे इस युग का अंतर्राजनीति के सिद्धान्त का निर्माण करने वाला प्रमुखतम विचारक मानना चाहिए।"